शुल्क १५ वर्ष
२१००/– रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/– रुपये
वार्षिक २५०/– रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३४ : नई दिल्ली : २७ नवम्बर से ३ दिसम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। आगामी ४ दिसम्बर को भीलवाड़ा पधारेंगे। यहां चार दिन का प्रवास है। बालोतरा तक का यात्रा–पथ पहले ही विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुका है। दर्शन–उपासना हेतु आने वाले श्रद्धालु उसी के अनुसार अपना कार्यक्रम सुनिश्चित करें।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

सत्य परेशान हो सकता है, परास्त नहीं

१३ नवम्बर। आज प्रातः कच्चे एवं ऊबड़–खाबड़ मार्ग से लगभग छह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर बिनोल पधारे। मध्यवर्ती जेतपुरा की भागल एवं रेबारियों की ढाणी में सैकड़ों ग्रामीणों के बीच पूज्यवर ने मनुष्य जीवन की दुर्लभता पर प्रेरक उपदेश दिया। पूज्यवर के आह्वान पर बड़ी संख्या में ग्रामवासियों ने चिलम, बीड़ी के बंडल और तम्बाकू के पैकेट श्रीचरणों के सम्मुख रखते हुए नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। गांव की गलियों में दोनों ओर खड़े ग्रामीणों का श्रद्धायुक्त वंदन स्वीकार करते हुए आचार्यप्रवर तेरापंथ भवन में पधारे।

सुख वाटिका स्थित महाश्रमण समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत बाल भारती के बच्चों ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती कमलादेवी चोरड़िया ने ग्यारह की तपस्या का प्रत्याख्यान कर तपोमय अभिनंदन किया। श्री रोशनलाल बाफना, श्री कन्हैयालाल भंडारी, श्री शंकरलाल चोरड़िया, श्री फतेहलाल सोनी, श्री भेरूंलाल चोरड़िया, श्री लक्ष्मीलाल चोरड़िया, श्री देवीलाल बाफना, श्री सोहनलाल चोरड़िया, श्री दीपचन्द डांगी, श्री भैरूंलाल ढालावत, श्री सोहनलाल धोका एवं श्री देवीलाल पोखरना––इन बारह श्रावकों ने सपत्नीक शीलव्रत का संकल्प स्वीकार किया।

सम्बोधि में चतुर्मास संपन्न कर पूज्यचरणों में पहुंचे ध्यानयोगी मुनि शुभकरणजी, कांकरोली चतुर्मास करने वाले मुनि सुरेशकुमारजी, राजनगर चतुर्मास संपन्न कर पहुंची साध्वी विद्यावतीजी 'प्रथम' की सहयोगी साध्वी सूर्ययशाजी व साध्वी कौशलप्रभाजी ने गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। मुनि संबोधकुमारजी के वक्तव्य के बाद कांकरोली महिला मंडल व कन्यामंडल ने कन्या सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत भरे गए फॉर्म पूज्यवर को भेंट किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का इस अवसर पर प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने पावन प्रवचन में कहा––'आत्मा और शरीर, ये दो मूल तत्त्व हैं। शरीर पर ध्यान दिया जाता है, किन्तु आत्मा की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। चेतना मूल है, इसलिए इसकी विशुद्धि बनी रहनी चाहिए। इसके लिए अहिंसा, सत्य की साधना, तपस्या व ईमानदारी की आवश्यकता होती है। कष्टानुभूति यत्किंचित हो सकती है, पर सत्य की साधना सतत चलती रहे। सत्य परेशान हो सकता है, किन्तु परास्त नहीं हो सकता। सत्य के अनुपालन से चेतना विशुद्ध बनती है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति श्रीसंपन्न अर्थात आभासंपन्न रहता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा––'मेवाड़ में बहुत से क्षेत्रा हैं। हमारे साधु–साध्वियों ने छोटे–छोटे कच्चे मकानों में रहकर, कठिनाइयों को सहकर श्रावकों को धार्मिकता का सिंचन दिया, प्रेरणा दी। दुर्गम रास्तों से चलकर ऐसे गांवों और भागलों में गए, जहां साधु–संतों का आगमन बहुत कम होता था। यह एक प्रकार से संघ

के लिए उनकी कुर्बानी कही जा सकती है।

चतुर्मास संपन्न कर गुरु चरणों में पहुंचे साधु–साध्वियों के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा––'आज ध्यान योगी मुनिश्री शुभकरणजी स्वामी के दर्शन हुए। मुनिश्री ध्यान योग के अच्छे साधक हैं। मुनिश्री सुरेशकुमारजी स्वामी भी आज पधारे हैं। ये मुनि सुमेरमलजी 'सुमन' के सहवर्ती रहे हैं। सिवांची–मालाणी के कई दूर–दराज के क्षेत्राों में प्रवास कर श्रावक समाज की संभाल की है। अच्छा काम करने वाले संत हैं। साध्वी विद्यावतीजी ने केलवा के पड़ोसी क्षेत्रा राजनगर में चतुर्मास किया। साध्वियां भी अपने ढंग से अच्छा कार्य करती हैं।

रात्रि में चले स्वागत कार्यक्रम में श्रद्धा–भक्ति से ओतप्रोत गीत और वक्तव्य हुए। आचार्यवर का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ। आज भक्ति संगीत संन्ध्या कार्यक्रम के अन्तर्गत संगायिका भगिनीद्वय हेमलता व सोनम पीपाड़ा ने देर रात तक अपने सुमधुर भजनों को प्रस्तुति दी।

समर्पण से चहुंमुखी विकास संभव

१४ नवम्बर। आज प्रातः पूज्य आचार्यवर ने बिनोल के तेरापंथी व अन्य लगभग सौ घरों का स्पर्श किया। पूरे गांव की गलियां 'वन्दे गुरुवरम्' के घोष से गूंज उठीं।

सुख वाटिका में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी के गीत प्रस्तुति के बाद चारभुजा चतुर्मास संपन्न कर पहुंची साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़) ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए सहवर्तिनी साध्वियों के साथ गीत प्रस्तुत किया। लंदन व यूरोप के कई देशों की यात्राा कर समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी एवं विकासप्रज्ञाजी ने आज गुरुदर्शन किए। कार्यक्रम में समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी ने अपनी यात्राा के अनुभवों को प्रस्तुत किया। उदयपुर के संयुक्त आयकर आयुक्त श्री ललितप्रकाश जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। बिनोल में चले नशामुक्ति अभियान के अन्तर्गत भरे गए ४३३ फार्म तथा अन्य त्याग–प्रत्याख्यान के १६६ फार्म पूज्यवर को भेंट किए गए। ग्राम की अणुव्रत बाल भारती सहित चार स्कूलों के विद्यार्थी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'व्यक्ति को अपना विकास करना है तो उसे स्वयं को गुरु के चरणों में समर्पित करना होगा। समर्पण के अभाव में व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास नहीं हो सकता। एक आदर्श शिष्य बनने के लिए व्यक्ति में श्रद्धा–भक्ति व समर्पण का भाव आवश्यक है। भगवान व गुरु की आज्ञा के विपरीत व्यक्ति को नहीं जाना चाहिए। गुरु के साथ शिष्य का जुड़ाव तभी हो सकता है, जब शिष्य पूरे मनोयोग से गुरु के प्रति समर्पित हो।'

आज बाल दिवस के अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित विद्यार्थियों को पूज्यप्रवर ने नशामुक्ति का संकल्प दिलवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया। रात्रि में अयोजित कार्यक्रम में भी अच्छी उपस्थिति रही। सामान्यतः बिनोल में पचीस जैन परिवारों के घर खुले रहते हैं। पूज्यप्रवर के आगमन पर अस्सी घर खुले। उनमें ६५ घर तेरापंथी थे। सभी परिवार प्रायः मुम्बई प्रवासी हैं। पूरे गांव में उत्सव का–सा माहौल रहा।

ध्यान दें गुरु की दृष्टि पर

१५ नवम्बर। आज प्रातः १५.०३ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर कुआंरिया पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री बसंतीलाल बाबेल, पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट द्वारा विचार प्रस्तुति के बाद मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में लोगों को आचार्यवर के प्रवास का पूरा उपयोग करने की प्रेरणा दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने तीर्थ के महत्त्व को रेखांकित करते हुए गुरु सन्निधि का लाभ उठाने का आह्‌वान किया।

परम पावन आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'शारीरिक सुख क्षणिक हैं, जबकि आत्मा का सुख परम सुख है। व्यक्ति की दृष्टि परम पर केन्द्रित होनी चाहिए। वह कुछ ऐसा उद्यम करे, जिससे प्रभुता की साधना की जा सके। इसके लिए भीतरी विकारों एवं कषायों को त्याग कर विनम्रता को विकसित कर क्षमा एवं भक्ति को अपनाना होगा।'

आचार्यवर ने आगे कहा––'आचार्य संघ के विकास पर ध्यान देते हैं। इसलिए शिष्यों का यह दायित्व है कि वे गुरु की दृष्टि पर ध्यान दें। सुविनीत शिष्य उसे माना जाता है, जो गुरु की दृष्टि व निर्देशों पर

ध्यान देता है। कुछ वर्ष पूर्व आचार्य महाप्रज्ञजी यहां पधारे थे। यहां आने पर श्रावक मनोहरलाल बड़ोला की स्मृति हो रही है। वे श्रद्धा–भक्ति से संपन्न श्रावक थे। कुछ माह पूर्व ही उनका निधन हो गया। कुआंरिया के लोगों में अहिंसा की चेतना का विकास हो तथा यहां के सभी लोग नशामुक्त जीवन जीने का प्रयास करें।'

रात्रि में स्वागत कार्यक्रम के पश्चात प्रवचन का क्रम चला। शाम को आचार्यवर ने श्रावकों के घरों में पगल्या किया।

झौर से पहले काबरी में शबरी के राम

१६ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर का प्रवास आज झौर निर्धारित था। हालांकि कच्चे पथ से विहार बारह किमी. ही था, किन्तु काबरीवासियों का आस्थासिक्त अनुरोध भक्तवत्सल आचार्यवर की यात्राा में तीन किमी. की वृद्धि करने वाला बन गया। परमपूज्य आचार्यवर ने काबरी पदार्पण से पूर्व गाडरियावास, रामपुरिया और जोधपुरा ग्राम के निवासियों को पावन संबोध प्रदान करते हुए उन्हें नशामुक्त बनने हेतु प्रेरित किया। अनेक ग्रामीणों ने पूज्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। काबरी में तीन तेरापंथी परिवारों सहित दस जैन परिवार हैं। आचार्यवर के पदार्पण से सबमें अतिशय उल्लास का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। इस छोटे से गांव में आचार्यवर का पदार्पण शबरी के घर राम के आगमन की घटना को मानस पटल पर ला रहा था। अपने स्वल्प प्रवास में आचार्यवर ने सभी जैन घरों का स्पर्श किया तथा श्रद्धालुओं को धार्मिक पाथेय प्रदान किया। संक्षिप्त कार्यक्रम में महिलाओं ने गीत के द्वारा अपने आराध्य का स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में ग्रामीणों को मानव जीवन को सफल बनाने हेतु प्रेरित किया।

काबरी से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर मार्गवर्ती गलवा गांव में महावीर भवन का स्पर्श करते हुए झौर पधारे। आराध्य का पदार्पण गांववासियों के लिए सभी त्योहारों का संगम बन गया। उनकी प्रफुल्लित मुखाकृति पर उनकी आन्तरिक प्रसन्नता मुखर हो रही थी। यहां पूज्यवर का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

जीवन धन्य बनाएं

झौर में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा––'जो जिनाज्ञा की आराधना करता है, वह संसार–समुद्र से तर जाता है और जो जिनाज्ञा की विराधना करता है, वह डूब जाता है। संयम की आराधना जिनेश्वर की आज्ञा में है। केवल जीना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण है संयम का जीवन जीना। त्याग–संयम के द्वारा अपनी आत्मा का उत्थान कर अपने जीवन को धन्य बनाएं।' कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी एवं मंत्राी मुनिश्री के भी प्रेरक अभिभाषण हुए।

झौर में दस तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यप्रवर ने उनके घरों का स्पर्श किया। रात्रिाकालीन कार्यक्रम के उपरान्त श्रावकों को आचार्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

भीलवाड़ा जिले में मंगल प्रवेश

१७ नवम्बर। आज परमाराध्य आचार्यवर ने प्रातः झौर से प्रस्थान किया। यद्यपि आज का विहार चार किमी. ही था, किन्तु नेगड़िया का खेड़ा एवं खजूरिया के श्रद्धालुओं की बलवती प्रार्थना पर आचार्यवर साढ़े तीन किमी. का अतिरिक्त विहार कर दोनों गांवों में पधारे। नेगड़िया का खेड़ा में आचार्यवर ने श्रद्धालुओं को धार्मिक प्रेरणा प्रदान की। यहां आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। तदुपरान्त पूज्यप्रवर छापरीखेड़ा में ग्रामीणों को पावन संबोध प्रदान करते हुए खजूरिया गांव में पधारे। दो भाइयों का बोल्या परिवार आराध्य को अपने बीच पाकर हर्षविभोर था। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने दोनों घरों का स्पर्श करते हुए परिवारों को निकट उपासना का अवसर प्रदान किया। ग्रामीणों को आचार्यवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। गांव के लोगों ने बताया––खजूरिया का देवस्थान प्रसिद्ध है। यहां प्रतिवर्ष लाखों लोग आते हैं। अनेक लोग यहां मन्दिर, धर्मशाला आदि बनवाना चाहते हैं, किन्तु देवता इसकी इजाजत नहीं देते। इस देवस्थान के कारण ग्रामीण सुखी और समृद्ध हैं।

खजूरिया से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर गंभीरपुरा में ग्रामीणों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कांगनी गांव में पधारे। मार्ग में आचार्यवर का राजसमन्द जिले से भीलवाड़ा जिले में प्रवेश हुआ। इस अवसर पर

भीलवाड़ा से समागत सैकड़ों लोगों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यवर के पदार्पण से कांगनीवासियों का उल्लास चरम पर था। सर्वत्रा श्रद्धा का ज्वार उमड़ रहा था। कुल १४.०४ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर कांगनी के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आजका प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में भीलवाड़ा जिले के सहाड़ा क्षेत्रा के विधायक श्री कैलाश त्रिावेदी ने पूज्यप्रवर का भीलवाड़ा जिले की सीमा पर भावपूर्ण स्वागत करते हुए आचार्यवर के मंगल पदार्पण को क्षेत्रावासियों का परम सौभाग्य बताया।

रेलमगरा चतुर्मास संपन्न कर श्रीचरणों में पहुंची साध्वी शान्ताकुमारीजी और जोजावर चतुर्मास संपन्न कर गुरुदर्शन करने वाली साध्वी प्रमिलाकुमारीजी ने अपने आस्थासिक्त विचार व्यक्त करते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत प्रस्तुत किया। मंत्राी मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'राग–द्वेष संसारवृद्धि के कारण बनते हैं। इनसे मुक्त होने पर ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दुर्लभ मनुष्य जीवन में राग–द्वेष से मुक्ति की साधना कर मोक्ष की ओर प्रस्थान करें।' आज दर्शन करने वाली साध्वियों के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा––'साध्वी शान्ताकुमारीजी रेलमगरा और साध्वी प्रमिलाकुमारीजी जोजावर चतुर्मास संपन्न कर आज यहां पहुंची हैं। रेलमगरा में चार और जोजावर में नौ वर्ष बाद चतुर्मास हुआ। साध्वियां अपने ढंग से काम करती हैं और जब यहां आती हैं तो उपहार लाती हैं। उपहार अच्छा भी है। मैंने गुरुदेव तुलसी की जन्म शताब्दी के सन्दर्भ में सौ दीक्षाओं की बात कही है। अब साधु–साध्वियां यह उपहार भी लाएं, जिससे इस लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।'

महामना कालूगणी की पुण्य धरा पर

१८ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः कांगनी से प्रस्थान कर महामना कालूगणी की पुण्य धरा गंगापुर पधारे। मार्ग में आचार्यवर का अमित बोलिया विद्या निकेतन में पदार्पण हुआ। संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रकाश बोलिया ने आराध्य का श्रद्धासिक्त स्वागत करते हुए छह विद्यालयों के संकल्पपत्रा पूज्यवर को भेंट किए। छात्राओं द्वारा गीत के उपरान्त श्रीमती लाडदेवी बोलिया ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने विद्यार्थियों को सद्‌गुणों का विकास करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्हें नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

स्वागत जुलूस के मध्य पूज्यप्रवर गंगापुर नगरपालिका के कार्यालय में पधारे। नगरपालिका की अध्यक्ष श्रीमती पूनम मेहता ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। मार्ग के दोनों ओर खड़े ब्राह्मण, माहेश्वरी, जिनगर, मुस्लिम, खटीक, रेगर आदि विभिन्न वर्गों के लोगों ने भी शान्तिदूत आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। भव्य स्वागत जुलूस में स्थानीय तेरापंथ समाज के साथ विभिन्न समुदाय के लोगों का उत्साह स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था।

कालू कीर्ति विहार का भव्य लोकार्पण

भव्य जुलूस के साथ कालू कल्याण कुंज्र होते हुए आचार्यवर ग्यारह किमी. का विहार कर महामना कालूगणी समाधि स्थल परिसर कालू कीर्ति विहार में पधारे। कालू कल्याण न्यास के अध्यक्ष श्री ख्यालीलाल तातेड़ ने श्री हंसमुखभाई मेहता आदि साथियों के साथ आचार्यवर की भावपूर्ण अगवानी की। कार्यकर्ता अपने श्रम को सुफल निष्पत्ति तक पहुंचा देखकर भावविभोर थे। परिसर के स्वागत द्वार के निकट श्री जेठमलजी टोडरवाल एवं केसरीमल चंडालिया परिवार के सदस्यों ने पूज्यवर का मंगलपाठ सुना। श्री राजकुमार विजयसिंह सुराणा परिवार द्वारा भव्य समाधि स्थल के लोकार्पण के पश्चात आचार्यवर ने कुछ क्षणों तक वहां ध्यान किया। तत्पश्चात आचार्यवर धानीन के जितेन्द्र मोहनलाल तातेड़ परिवार और गंगापुर के राजमल हस्तीमल गोखरू परिवार द्वारा लोकार्पित आर्ट गैलरी में पधारे। इस गैलरी में सुन्दर चित्राों के माध्यम से पूज्य कालूगणी के विभिन्न जीवन–प्रसंगों को चित्रिात किया गया है। आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर धानीन के श्री सोहनलाल कुन्दनमल चोरड़िया परिवार द्वारा कार्यालय और श्री सुरेन्द्र पृथ्वीराज कच्छारा, रीछेड़–मुम्बई द्वारा निर्मित श्रीमद् कालू विद्या मन्दिर का लोकार्पण किया गया। आचार्यवर का आज का प्रवास इसी नवनिर्मित कालू विद्या मंदिर में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री आनंदीलालजी हिरण और कालू कल्याण

न्यास के अध्यक्ष श्री ख्यालीलाल तातेड़ ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। स्थानीय नगरपालिका की अध्यक्ष श्रीमती पूनम मेहता ने नगर की ओर से तथा विभिन्न वर्गों की ओर से गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्यवर को अभिनंदन पत्रा समर्पित किए। मंत्राी मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा––'गंगापुर तेरापंथ के ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। यह अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी की महाप्रयाण भूमि और नवमाचार्य पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी की तिलकभूमि है। पूज्य कालूगणी का जीवन तेरापंथ के इतिहास में विशिष्ट रहा है। उनका जीवन तेजस्वी था। वे जागृत विवेक वाले महापुरुष थे। गुरुदेव तुलसी ने कालूयशोविलास महाकाव्य में उनके जीवनवृत्त को निबद्ध किया। हम परमपूज्य कालूगणी की विशेषताओं को आत्मसात् करने का प्रयास करें।'

कार्यक्रम में उपस्थित श्रमणसंघ के कमल मुनि 'कमलेश' ने लगभग सोलह वर्ष बाद आचार्यवर के दर्शन से उत्पन्न प्रसन्नता को अभिव्यक्ति देते हुए कहा––'आज मैं आचार्यश्री महाश्रमण की चरण–धूलि लेने के लिए यहां उपस्थित हुआ हूं।'

कालूगणी मेरे परदादा गुरु

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'आज हम गंगापुर आए हैं। आना तो परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ था, किन्तु वह नियति में नहीं था। इससे पूर्व सन २००४ में आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ मैं यहां आया था और उस समय गुरुदेव ने रंग भवन के विभिन्न ऐतिहासिक स्थानों से हमें परिचित कराया था। परमपूज्य महामना कालूगणी के साथ मेरा भी थोड़ा संबंध है, क्योंकि मैंने अपनी दीक्षा का निर्णय भाद्रपद शुक्ला षष्ठी के दिन कालूगणी की माला फेरने के पश्चात ही किया था। दो युगप्रधान आचार्यों के व्यक्तित्व का निर्माण संघ को उनका एक महान अवदान है। वे एक पुण्यवान आचार्य थे। उनमें साधना की तेजस्विता थी। महामना मघवागणी की उन पर अगाध कृपा थी। परमपूज्य माणकगणी के स्वर्गवास के बाद संघ की विकट स्थिति को संभालने में मुनि कालू(छापर) और मंत्राी मुनिश्री मगनलालजी स्वामी का बड़ा योगदान रहा। संसार की भाषा में कहूं तो उत्तराधिकार की परंपरा में कालूगणी मेरे परदादा गुरु थे। संघ का सौभाग्य था कि उसे कालूगणी जैसा महापुरुष आचार्य के रूप में प्राप्त हुआ। मुझे सात्विक संतोष है कि मैं गंगापुर आ गया। ख्यालीलालजी की भावना थी कि समाधि स्थल पर हमारा प्रवास होना चाहिए। हमने एक दिन–रात रहना स्वीकार कर लिया। समाधि को देखा तो गंगाशहर स्थित गुरुदेव तुलसी की समाधि का दृश्य मेरी स्मृति में आ गया। गुरुदेव तुलसी की समाधि का जो आकार है, लगभग वही आकार मुझे इस समाधि का लगा। गुरु–शिष्य में मुझे इस दृष्टि से समानता की प्रतीति हुई।'

पूज्यवर की पावन सन्निधि में मध्याह्न में कालू कीर्ति विहार के निर्माण में सहयोगी व्यक्तियों का सम्मान समारोह समायोजित हुआ। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यप्रवर ने कालू कीर्ति विहार (समाधि स्थल परिसर) का अवलोकन किया। कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर को परिसर से संबद्ध अवगति दी। स्थानकवासी संत कमलमुनि आदि तीनों मुनियों का भी रात्रि प्रवास आज यहीं रहा। पूज्यप्रवर ने कमल मुनि से विविध विषयों पर वार्तालाप किया।

प्रवास में भी तेरह किमी. से अधिक विहार

कहने को तो गंगापुर में आचार्यवर का द्विदिवसीय प्रवास था, किन्तु महातपस्वी आचार्यवर ने गंगापुर से लगभग छह किमी. दूर स्थित लाखोला गांव और अमृत महाविद्यालय से जुड़े श्रद्धालुओं के अनुरोध पर अनुग्रहवृष्टि करते हुए तेरह किमी. से अधिक विहार कर लिया। पूज्य आचार्यवर प्रातः महामना कालूगणी की समाधि स्थल पर ध्यान करते हुए वहां से प्रस्थान कर कालू कल्याण कुंज पधारे। यहां से आचार्यवर लाखोला के लिए प्रस्थित हुए। आचार्यवर का मार्गवर्ती रामद्वारा में भी पदार्पण हुआ। लाखोला के निकट गांव के गणमान्य व्यक्तियों के द्वारा पूज्यवर की भावपूर्ण अगवानी की गई। पूज्यवर के पदार्पण से लाखोला का कण–कण पुलकित था। आचार्यवर के महान अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उनके पास कोई शब्द नहीं था। यहां दस तेरापंथी परिवार हैं। आचार्यप्रवर उनके और अन्य जैनों के घरों का स्पर्श करते हुए स्थानीय विद्यालय में पधारे। यहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में सुनाणिया परिवार की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री शंभूलाल जैन ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त

किए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को सत्संगति का महत्त्व बताते हुए दुर्लभ मानव जीवन का लाभ उठाने की प्रेरणा प्रदान की। लाखोला से लौटते समय लाखोला निवासी उदयपुर प्रवासी श्री निर्मल जैन ने पूज्यवर के दर्शन कर कृतज्ञता व्यक्त की। आचार्यवर ने कहा––'तुम्हारे कारण लाखोला आना हो गया, अन्यथा आना होता अथवा नहीं भी।' आचार्यवर के मुखारविन्द से कृपापूर्ण शब्दों को सुनकर निर्मलजी श्रद्धाप्रणत थे।

आचार्य तुलसी अमृत महाविद्यालय में

लाखोला से प्रस्थान कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर तुलसी अमृत महाविद्यालय में पधारे। संस्थान के अध्यक्ष श्री बाबूलाल कच्छारा ने अपने साथियों के साथ आचार्यवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। पूज्यवर ने यहां अल्पकालिक प्रवास किया। संक्षिप्त कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के बाद अध्यक्ष श्री बाबूलाल कच्छारा ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए संस्थान की गतिविधियों की अवगति दी। कार्याध्यक्ष श्री मदन कावड़िया और प्राचार्य श्री पुखराज दक ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। सचिव श्री नवरतन हिरण ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती उषा शर्मा ने किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'पूज्य गुरुदेव तुलसी का कर्तृत्व महान था। उनके आचार्यकाल में कितने–कितने उपक्रम प्रारंभ हुए। परमपूज्य गुरुदेव के नाम से यह कॉलेज उनके आचार्यकाल के पचास वर्षों की संपन्नता के संदर्भ में निष्पन्न हुआ। कॉलेज की बिल्डिंग विशालकाय है। यहां के छात्रों में ज्ञान के साथ–साथ सत्संस्कार भी विकसित हों। गुरुदेव के नाम से संपृक्त इस महाविद्यालय में अणुव्रत का प्रभाव रहना चाहिए। बीच–बीच में संघर्ष आते रहे हैं। संघर्षों के समय साहस और शान्तभाव से समाधान का प्रयास हो तो समाधान मिल भी सकता है। बाबूलालजी कच्छारा गत छह वर्षों से इस संस्थान का नेतृत्व कर रहे हैं। वैसे ये काफी समय हमारे आसपास लगाने वालों में हैं। कई–कई श्रावकों का बारह महीनों में अधिकांश समय हमारे आसपास ही लगता है। ये भी हैं और इनसे भी बढ़कर कहूं तो इनकी धर्मपत्नी सुशीलाबाई है, जो 'श्राविका गौरव' को प्राप्त है। इतनी सेवा की भावना होना भी विशेष बात है। मुम्बई में अच्छे बंगलों में रहने वालों के लिए यहां कुटीरों और टेन्टों में रहना सामान्य बात नहीं है। इस विद्या संस्थान में जीवनविज्ञान और जैनिज्म का भी अध्ययन होता रहे और यह नैतिक, धार्मिक विकास करता रहे।

आचार्य तुलसी की तिलकभूमि में प्रवचन

महातपस्वी पूज्यप्रवर आचार्य तुलसी अमृत महाविद्यालय से प्रस्थान कर पुनः कालू कल्याण कुंज में पधारे। यहां बिना विश्राम किए ही आचार्यवर प्रातःकालीन कार्यक्रम में पधार गए और प्रवचन प्रारंभ कर दिया। आज का कार्यक्रम कालू कल्याण कुंज के बाहरी चौक में हुआ। यह वही चौक है, जहां नवमाचार्य गुरुदेव तुलसी का पदाभिषेक किया गया था। आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में श्रद्धालुओं को अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रखने की प्रेरणा प्रदान की तथा परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की तिलकभूमि के निवासियों को गुरुदेव तुलसी की जन्म शताब्दी वर्ष में सौ दीक्षाओं के लक्ष्य की संपूर्ति में योगभूत बनने हेतु प्रेरित किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक व्यक्तियों ने परिवार के किसी दीक्षार्थी के तैयार होने पर उसे 'ना' कहने का परित्याग किया।

मध्याह्न में गंगापुर के तेरापंथ परिवारों को आचार्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं के अनुरोध पर आचार्यवर सायंकालीन आहार के पश्चात उनके घरों का स्पर्श करने पधारे। घरों की बहुलता के कारण स्थिति यह बन गई कि ज्यों–ज्यों सूर्यास्त का समय निकट होता जा रहा था, त्यों–त्यों आचार्यवर प्रवास स्थल से दूर होते जा रहे थे। भक्तों की भावना भगवान को लगभग डेढ़ किमी. दूर तक ले गई। आखिर समय की अल्पता को देखते हुए आचार्यवर पुनः प्रवास स्थल की ओर अभिमुख हुए और तीव्र गति से चल कर लगभग पन्द्रह मिनट दिन शेष रहते पुनः प्रवास स्थल पर पधारे।

आज आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा श्री केसरीमल

चंडालिया परिवार के आर्थिक सहयोग से निःशुल्क चिकित्सा शिविर का समायोजन किया गया। इस शिविर में गीतांजलि हॉस्पिटल उदयपुर से समागत चिकित्सकों द्वारा सात सौ बारह रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। शिविर की समायोजना में तेयुप गंगापुर, श्री कैलाश बाफना, श्री कैलाश मेहता, श्री अनिल चंडालिया, सुनील चंडालिया एवं श्री नवीन चोरड़िया का उल्लेखनीय श्रम रहा।

कालूगणी की महाप्रयाण स्थली में रात्रि प्रवास

परम श्रद्धेय आचार्यवर आज रात्रिकालीन प्रवचन के पश्चात रात्रि प्रवास हेतु महामना कालूगणी की महाप्रयाण स्थली 'रंग भवन' में पधारे। श्री कैलाशजी हिरण आदि पारिवारिक जन पूज्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर आह्लादित थे। पूज्यवर ने यहां हिरण परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया। पश्चिम रात्रि में पुनः कालू कल्याण कुंज में पदार्पण से पूर्व श्री विमल सोनी (सोजतरोड) ने आचार्यवर से पद्य रचना का अनुरोध किया। पूज्यवर ने उनके निवेदन पर एक पद्य फरमाया, जो इस प्रकार है––

रंग भवन में रात्रि का, किया सुखद आवास।
'महाश्रमण' सह संतगण, अड़सठ मृगसर मास।।

गंगापुर में आचार्यवर का यह द्विदिवसीय प्रवास अत्यधिक व्यस्त रहा। श्रद्धालुओं ने इस प्रवास का भरपूर लाभ उठाया।

जय–जय ज्योति चरण

२० नवम्बर। आज प्रातः आचार्यप्रवर ने गंगापुर से नान्दसा के लिए विहार किया। विहार के समय मार्ग में अचानक एक व्यक्ति आचार्यवर के सामने साष्टांग लेट गया। आचार्यवर ने कुछ क्षण तक उसके उठने का इन्तजार किया, किन्तु वह उठने का नाम ही नहीं ले रहा था। उसे उठने के लिए कहा गया तो उसने कहा––'ऐसे नहीं उठ सकता। मैं आज इस संकल्प के साथ आया हूं कि गुरुजी के चरण मेरे सिर पर टिकें। इस संकल्प की संपूर्ति हुए बिना मैं नहीं उठूंगा।' आचार्यवर इस तरह सिर पर चरण रखने को तैयार नहीं थे। कुछ क्षणों की रस्साकसी के बाद किसी के द्वारा नाम पूछने पर उसने थोड़ा सिर उठाया और कहा––'मैं सीकर का पंडित ओमप्रकाश जोशी हूं।' इस बीच आचार्यवर के चरण निकटतर हुए और उसने भक्ति भाव और बड़ी निष्ठा के साथ पूज्यवर का चरण स्पर्श किया। अपने हाथों से पूज्यचरण को मस्तक पर रखा। अपनी भावना को फलित कर पंडित जोशी उठे और बारंबार वंदन करते हुए अपनी राह पकड़ी। न जाने कहां–कहां से लोग अपनी श्रद्धासिक्त भावना के साथ श्रीचरणों में पहुंचकर धन्यता की अनुभूति करते हैं। धन्य हैं ज्योति–चरण!

जय निनादों के बीच नान्दशा में

२० नवम्बर को प्रातः गंगापुर के कुछ घरों का स्पर्श करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर लगभग साढ़े छह किमी. का विहार कर नान्दशा पधारे। सैकड़ों ग्रामवासियों का अभिवादन स्वीकार करते हुए पूज्यवर प्रवास स्थल भेरूलाल भगवतीलाल कैलाशचन्द बाफना परिवार के भवन में पधारे। राजकीय माध्यमिक विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूर्व सरपंच श्री विष्णु सुवालका एवं अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र गंगापुर के संयोजक ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मुख्य नियोजिकाजी के वक्तव्य के बाद महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा––'असंयम वह तत्त्व है, जहां हिंसा, झूठ आदि की प्रवृत्ति होती है। इससे निवृत्त होना संयम है। जो अपूर्ण संयम का परिपालन करता है, वह श्रावक की कोटि में आता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से आंशिक संयम पालन का पथ प्रशस्त किया। जैन–जैनेतर सभी अणुव्रत की साधना कर सकते हैं। विद्यार्थी, शिक्षक आदि हर वर्ग के लोग अणुव्रत की साधना के साथ वर्गीय आचारसंहिता को स्वीकार करें। जिसके जीवन में आंशिक संयम का भी अवतरण हो जाता है, उसमें सज्जनता और उत्तमता कुछ अंशों में अवश्य आ जाती है। इस दुर्लभ मानव जीवन में सभी व्यक्ति मानवीय मूल्यों को विकसित करने का प्रयास करें।'

कार्यक्रम में उपस्थित स्कूली विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। सात घरों में आचार्यवर ने पगल्या कर उन परिवारों को उपकृत किया। रात्रि में स्वागत के औपचारिक कार्यक्रम के साथ आचार्यवर ने पारिवारिक सेवा कराई और प्रेरणा प्रदान की। गांव में मुख्यतः चार घर खुले रहते हैं। पूज्यवर के पावन पदार्पण से सभी बारह घर ही नहीं, उन परिवारों के अधिकांश सदस्य भी अपने गांव पहुंच गए। सबमें अच्छा उत्साह रहा।

आमली में गणमाली का आगमन

२१ नवम्बर। आज प्रातः पूज्यप्रवर ने कच्चे–पक्के मार्ग से अणुव्रत ग्राम 'आमली' के लिए विहार किया। पूज्य गुरुदेव तुलसी ने लगभग ढाई दशक पूर्व आमली नाम को 'आम्रपाली' में परिवर्तित कर दिया था। लगभग छह किमी. का विहार कर आचार्यवर गांव में पधारे। यहां आपका प्रवास स्थानीय विद्यालय में हुआ। स्कूल प्रांगण में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। क्षेत्रीय विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। गंगापुर चतुर्मास करने वाली साध्वी गुणमालाजी एवं उनकी सहवर्तिनी साध्वी प्रेक्षाश्रीजी ने गुरुचरणों में अपनी श्रद्धा को अभिव्यक्ति दी। स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री गेहरीलाल चपलोत ने पूज्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। अणुव्रत प्रभारी शासनश्री मुनि सुखलालजी एवं डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत ग्राम आमली में चल रही अणुव्रत की प्रवृत्तियों की चर्चा की। मुख्यनियोजिका एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा––'राग–द्वेष की मुक्ति के लिए भगवान देशना देते हैं, प्रवचन करते हैं। व्याख्यान देने वाले अपना और दूसरों का भी कल्याण करते हैं। वक्ता को योग्य, विद्वान और विज्ञाता होना चाहिए। उसकी वक्तृत्वशैली प्रभावी होनी चाहिए। प्रशस्त वक्तव्यशैली से श्रोता को तत्त्व, सिद्धान्त, परम्परा व जीवनबोध का ज्ञान होता है। अच्छे वक्ता को सुनने से वक्तृत्वशैली का विकास होता है। जनता की स्वाध्याय की प्यास को बुझाने का दायित्व प्रवचनकार का है। ईर्ष्या, लोभ, अहंकार आदि विकारों को निर्मूल करने में उपदेश भी सहायक बन सकता है। नशे की लत को छुड़ाना व स्वभाव को बदलना उपदेश से संभव है।'

आचार्यवर ने आगे कहा––'आचार्य तुलसी ने भारत के विभिन्न प्रान्तों की पदयात्राा की। अणुव्रत के माध्यम से उन्होंने मानव सुधार का महनीय प्रयास किया। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवचन से कितने ही लोगों को प्रेरणा मिली और उनके जीवन में बदलाव आया। आचार्य तुलसी इस गांव में पधारे। सन् २ॉ॰४ में आचार्य महाप्रज्ञ का आगमन हुआ। आज हम आमली आए तो विशाल अणुव्रत द्वार देखा। उस पर लिखित अणुव्रत के नियमों से प्रेरणा मिल सकती है। आचार्य तुलसी के मार्गदर्शन में शासनश्री मुनि सुखलालजी ने अणुव्रत की दृष्टि से यहां अच्छा काम किया। छह गांव के इस चोखले में यह एक अणुव्रत ग्राम है। आमली के लोग अणुव्रत ग्राम के आदर्श को अक्षुण्ण बनाए रखें।' कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा मुम्बई के मंत्री श्री दिनेश सुतरिया ने किया। अणुव्रत ग्राम भारती विनयपुरम की छात्राओं ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

आज सायं पूज्यप्रवर ने आमली के श्रद्धालु परिवारों के घरों का स्पर्श किया और रात्रि में पारिवारिक सेवा करवाई। पूज्यवर की प्रेरणा से लोगों में अध्यात्म की चेतना जागी। कार्यकर्ताओं ने बताया कि सामान्यतः कुल दस परिवारों के तीस–चालीस सदस्यों वाले इस गांव में आज पूज्यवर के एकदिवसीय प्रवास में सभी मूल सत्राह घर खुले। अहमदाबाद, सूरत और मुम्बई में प्रवासित ६५ चौकों में विभक्त इन परिवारों के लगभग चार सौ लोग अपने व्यवसाय को छोड़कर गुरु उपासना में अपने गांव पहुंचे। पूरे गांव में उल्लास और उत्साह का वातावरण रहा।

सन् २०११ में विशिष्ट संबोधन प्राप्तकर्ताओं की सूची

शासनसेवी

१. स्व.श्री रणजीत बैद	कोलकाता	५. श्री विमल नाहटा	गुवाहाटी

२. स्व.श्री संपतमल संचेती	मोमासर	६. श्री नवरतनमल बैद	राजलदेसर
३. श्री भोजराज बैद	कोलकाता	७. श्री ताराचन्द रामपुरिया	सुजानगढ़
४. डॉ. प्रेमसुख मरोठी	नोखा		

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१. श्री रतनलाल बच्छावत	सरदारशहर	२. श्री मोतीलाल बोथरा	बीकानेर
३. श्री देवचन्द दूगड़	कोलकाता	४. श्री भंवरलाल बैद	कोलकाता
५. श्री शुभकरण बैद (लाछड़सर)	राजलदेसर	६. श्री रायचन्द बैद	रतनगढ़
७. श्री मन्नालाल बीकानेरिया	जावद	८. स्व. श्री भंवरलाल बैद मेहता	बालोतरा
९ स्व. श्री लक्ष्मीलाल ढीलीवाल	लावासरदारगढ	१0. स्व. श्री भंवरलाल बाफणा	अहमदाबाद
११. स्व. श्री केवलचन्द पीपाड़ा	मुसालिया	१२. स्व. श्री सज्जनकुमार जैन	हांसी
१३. श्री महेशभाई नानावटी	सूरत	१४. श्री पुखराज धोका	सायरा–सूरत
१५. स्व. श्री मोहनलाल सेठिया	पूना	१६. स्व. श्री नवरत्नमल बोथरा	लूणकरणसर
१७. स्व. श्री रोशनलाल सुराणा	आमेट	१८. श्री झमकलाल भंडारी	पेटलावद
१९ श्री कुन्दनमल चुन्नीलाल कोठारी	रींछेड़	२0. श्री शंकरलाल सामोता	नाथद्वारा
२१. श्री भोलीराम राठौड़	अंटालिया	२२. श्री सूरजमल नाहटा	छापर
२३. स्व. श्री सोहनलाल गेलड़ा	हरनावां	२४. श्री मनोहरलाल बड़ोला	बड़ोदरा
२५. स्व. श्रीचन्द डागा	राजलदेसर	२६. श्री मोहनलाल सोलंकी	सायरा
२७. श्री सोहनलाल मेहता	सायरा	२८. श्री भंवरलाल नाहर	देशनोक
२९. स्व. श्री सिरेमल नाहर	बेंगलोर	३0. श्री मालचन्द भंसाली	कोलकाता
३१. श्री सूरजमल बोथरा	बीकानेर	३२. श्री भंवरलाल भंसाली	गंगाशहर–पाली
३३. श्री छगनलाल गोखरू	आसीन्द	३४. श्री लाभचन्द पुगलिया	श्रीडूंगरगढ़–दिल्ली
३५. श्री भीखमचन्द बैद	श्रीडूंगरगढ़	३६. श्री हणवंतराय मेहता	जोधपुर
३७. श्री सरबतचन्द धाड़ीवाल	छोटीखाटू	३८. श्री रोशनलाल धाकड़	शिशोदा–मुम्बई
३९. श्री विपिनभाई शाह	मुम्बई	४0. श्री मदनलाल बीकानेरिया	जावद
४१. श्री पुखराज भंडारी	रतलाम	४२. श्री सत्यनारायण जैन	टिटिलागढ़
४३. श्री धनराज धारीवाल	गुड़ा–चेन्नई	४४. श्री शान्तिलाल गादिया	पेटलावद
४५. श्री भंवरलाल कांकरिया	पाली	४६. श्री शंकरलाल भंसाली	अहमदाबाद
४७. श्री हस्तीमल गोखरू	गंगापुर	४८. श्री ज्ञानचन्द गोयल	जावद
४९. स्व.श्री कन्हैयालाल डूंगरवाल	दौलतपुरा	५0. श्री सुरेश कावड़िया	राजनगर
५१. श्री कन्हैयालाल छाजेड़	सरायपाली	५२. श्री मदनलाल रांका	आसीन्द
५३. श्री रोशनलाल मेहता	पिपलान्त्री	५४. श्री शान्तिलाल कातरेला	बगड़ी–चेन्नई
५५. स्व. श्री जसकरण फूलफगर	गुवाहाटी	५६. स्व. श्री नगराज घीया	इन्दोर
५७. स्व. शुभकरण लूणिया	चाड़वास	५८. स्व. विनोद सुराणा	तारानगर
५९. स्व. श्री धूलचन्द कोठारी	सेवन्त्री		

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१. श्रीमती किरणदेवी गोठी	सरदारशहर	२. श्रीमती विजयादेवी बैद	राजलदेसर
३. श्रीमती रतनीदेवी नौलखा	सरदारशहर	४. श्रीमती चन्द्रावती जैन	संगरूर
५. श्रीमती गट्टूदेवी भुतोड़िया	लाडनूं	६. श्रीमती मोहिनीदेवी बरड़िया	सरदारशहर
७. श्रीमती सम्पतदेवी सेठिया	लाडनूं	८. श्रीमती लक्ष्मीदेवी बच्छावत	जयपुर
९. स्व. श्रीमती शांतिदेवी गोयल	सिरसा	१0. स्व. श्रीमती लाधूदेवी पुगलिया	फारबिसगंज
११. स्व. श्रीमती उमरावदेवी सेठिया	बेंगलुरु	१२. स्व. श्रीमती झूमरीदेवी डागा	कोलकाता
१३. स्व. श्रीमती भंवरीदेवी बोथरा	छापर	१४. स्व. श्रीमती शांतिदेवी कावड़िया	सायरा

१५. स्व. श्रीमती सुखराजदेवी बैद राजलदेसर
१६. स्व. श्रीमती सुन्दरदेवी खटेड़ लाडनूं
१७. स्व. श्रीमती दर्शनदेवी जैन दिल्ली
१८. स्व. श्रीमती राजकंवरीदेवी कोठारी राजनांदगांव
१६. श्रीमती संतोषदेवी बोहरा मोलेला
२०. श्रीमती मदनदेवी कोठारी रींछेड़
२१. श्रीमती सज्जनदेवी भांडावत जयपुर
२२. स्व. श्रीमती कमलादेवी दूगड़ आसीन्द
२३. स्व. श्रीमती लादीदेवी आंचलिया उधना
२४. श्रीमती कलकत्तीदेवी गोलछा हुबली
२५. श्रीमती बदामदेवी कोठारी केलवा
२६. श्रीमती अणचीदेवी मूथा काच्छवली
२७. श्रीमती केसरदेवी दूगड़ हैदराबाद
२८. श्रीमती कन्यादेवी भंसाली चेन्नई
२६. श्रीमती मांगीबाई डोसी रामसिंह का गुड़ा
३०. स्व. श्रीमती अणचीदेवी मूथा बेंगलुरु
३१. स्व. श्रीमती नानूदेवी बाफणा लाडनूं
३२. स्व.श्रीमती प्रेमलतादेवी बीकानेरिया जावद
३३. स्व. श्रीमती भंवरीदेवी डागा देवगढ़
३४. श्रीमती सज्जनदेवी सुतरिया अड़सीपुरा
३५. श्रीमती नजरीबाई मेहता राजनगर
३६. स्व. श्रीमती मनोहरीदेवी मालू श्रीडूंगरगढ़
३७. श्रीमती कौशल्यादेवी जैन हिसार
३८. श्रीमती श्रीयादेवी नाहर देशनोक
३६. स्व.श्रीमती इलायचीदेवी चोपड़ा गंगाशहर
४०. स्व.श्रीमती भाग्यवंतीदेवी चोपड़ा अहमदाबाद
४१. स्व.श्रीमती हुलासीदेवी बोथरा छापर
४२. स्व.श्रीमती अमानदेवी सिंघी लाडनूं
४३. स्व.श्रीमती रतनदेवी मुर्डिया उदयपुर
४४. स्व.श्रीमती हुलासबाई पोरवाल उदयपुर
४५. स्व.श्रीमती राजबाला जैन दिल्ली
४६. स्व.श्रीमती कमलादेवी चोरड़िया लाछुड़ा
४७. स्व.श्रीमती घेवरीदेवी भंसाली सुजानगढ़
४८. स्व.श्रीमती कानीदेवी सुराणा नोखा
४६. श्रीमती संतोकीदेवी धाकड़ शिशोदा
५०. श्रीमती पिस्तांबाई बोहरा मुसालिया–बेंगलुरु
५१. श्रीमती कंचनदेवी मेहता मजेरा
५२. श्रीमती भंवरीदेवी महनोत उदासर
५३. स्व.श्रीमती रायकंवरीदेवी सेठिया फारबिसगंज
५४. स्व.श्रीमती गीतादेवी सिंघी मुम्बई
५५. श्रीमती सायरदेवी गुन्देचा नाथद्वारा
५६. श्रीमती फूलीदेवी कोठारी गजपुर–सूरत

तपोनिष्ठ श्रावक/श्राविका

१. श्री इन्द्रमलजी राठौड़ सूरत
३. स्व. श्रीमती धन्नीदेवी बुरड़ जसोल
२. स्व. श्रीमती अणचीदेवी चोपड़ा बालोतरा
४. श्रीमती विमलादेवी मूथा चेन्नई

कल्याण मित्र

१. वैद्य श्री बालकृष्ण रतनगढ़
३. श्री डालमचन्द बैद रतनगढ़
२. श्री शांतिलाल सेठिया सोलापुर
४. स्व.श्री कमलेश चतुर्वेदी अमेठी

महादानी श्रावक–श्राविकाएं

१. श्री बाबूभाई सिंघवी फतेहगढ़
३. श्री कमलसिंह दूगड़ लाडनूं
२. श्रीमती कानूबेन सिंघवी फतेहगढ़
४. श्रीमती सूरजदेवी दूगड़ लाडनूं

तत्वज्ञ श्राविका

१. स्व. श्रीमती सुवटीदेवी बैद राजलदेसर

- संबोधन–अलंकरण समारोह आगामी आमेट मयार्दा महोत्सव के अवसर पर माघ कृष्णा चतुर्थी (२७ जनवरी २०१२) को पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित है। संबोधन प्राप्त श्रावक–श्राविकाओं और उनके परिजनों से निवेदन है कि अब तक जिन्होंने संबोधन प्राप्तकर्ता का परिचय एवं फोटो महासभा कार्यालय को प्रेषित नहीं किया है, वे अतिशीघ्र परिचय एवं दो फोटो महासभा के कोलकाता कार्यालय को प्रेषित कर दें। अधिक जानकारी के लिए मो. नं. ०९४३३०१४२६१ तथा ०९८३१०३४६३२ पर संपर्क किया जा सकता है।

स्मृति–संबल

- लाडनूं निवासी श्री जसकरण फूलफगर (सुपुत्रा–स्व. श्री पूनमचन्दजी फूलफगर) का गुवाहाटी में स्वर्गवास हो गया। वे साध्वी केसरजी व समणी शुभप्रज्ञाजी के परिवार से संबद्ध थे। गुवाहाटी सभा के दो बार मंत्रीा रहे श्री जसकरणजी ने वहां के तेरापंथ भवन के निर्माण और नवीनीकरण में अपना विशेष योग दिया। गुवाहाटी की अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। मृदु और सौम्य स्वभाव के जसकरणजी श्रद्धालु और समर्पित श्रावक थे। मरणोपरान्त उनके नेत्राों का दान किया गया।
- सरदारशहर निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती बग्गीदेवी डागा(धर्मपत्नी–स्व.श्री हंसराजजी डागा) का ९८ वर्ष की अवस्था में छह दिन के तिविहार एवं दस मिनट के चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। उनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। वहां प्रवासित साध्वी संगीतश्रीजी आदि साध्वियों का उन्हें अच्छा आध्यात्मिक सहयोग प्राप्त हुआ।
- लाडनूं निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती सुमन दूगड़ (धर्मपत्नी–श्री धनपतसिंह दूगड़) का असाध्य बीमारी से मात्रा तैंयालीस वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। मृदुभाषिनी सुमन ने दृढ़ मनोबल से बीमारी के कष्ट को सहन किया। सुमनदेवी की दादी श्रीमती भंवरीदेवी बांठिया को भी पैंतालीस दिनों का प्रभावक संथारा आया था।
- रतनगढ़ निवासी श्री दुलीचन्द बोथरा का पर्युषण प्रतिक्रमण करते हुए गुवाहाटी में स्वर्गवास हो गया। छिहत्तर वर्षीय बोथराजी धर्मनिष्ठ श्रावक थे। उनके नेत्रा मरणोपरान्त दान किए गए।
- सुजानगढ़ निवासी श्रीमती घेवरीदेवी भंसाली (धर्मपत्नी–श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. नोरतनमलजी) भंसाली का सात दिन की संलेखना व छह दिन के संथारे में पचासी वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। प्रतिदिन सामायिक, पोरसीपर्यंत त्याग, पांचों तिथियों को हरित्काय, जमीकन्द एवं रात्रि भोजन का परित्याग था। वर्ष में एक माह गुरु उपासना करती थीं। सुजानगढ़ में रक्ताल्पता के कारण वे अस्वस्थ हुईं। स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ तो वहां प्रवासित शासनगौरव साध्वी राजीमतीजी की प्रेरणा से आध्यात्मिक चिकित्सा के फलस्वरूप प्रतिघंटे त्याग व तपस्या का सिलसिला शुरू हुआ। अन्ततः अनशन की प्रबल भावना के कारण उन्हें संथारा करवाया गया। इनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। श्राविका घेवरीदेवी भंसाली की अंतिम यात्राा भी बड़ी प्रभावक रही।
- कोशीथल–गंगापुर निवासी भीलवाड़ा प्रवासी श्री रामलाल हिरण (सुपुत्रा–श्री भंवरलाल हिरण) का तैंतालीस वर्ष की आयु में असाध्य बीमारी के कारण देहावसान हो गया। वह धार्मिक प्रवृत्ति का युवक था।
- चारभुजा–उदयपुर निवासी श्री चन्दनमलजी कोठारी का देहावसान हो गया। श्री कोठारी धार्मिक भावना वाले श्रावक थे। उनके सुपुत्रा लक्ष्मण, किशन, जितेन्द्र, सुरेन्द्र आदि में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- लावासरदारगढ़ निवासी श्रीमती सोहनीदेवी संचेती (धर्मपत्नी–स्व. उदयलालजी संचेती) का देहावसान हो गया। वह धार्मिक स्वभाव वाली श्राविका थी।
- स्व. श्रीमती झूमरदेवी धारीवाल (धर्मपत्नी–श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री सरबतमलजी धारीवाल, छोटीखाटू–सूरत) का स्वर्गवास हो गया। छोटीखाटू का धारीवाल परिवार शासनभक्त परिवार है। श्रीमती झूमरदेवी धर्मपरायण श्राविका थीं। साधु–साध्वियों की सेवा बड़े मनोयोग से करती थीं। अपने परिवार को भी उन्होंने धर्म के अच्छे संस्कार दिए। उनके सुपुत्रा किशोर, डालमचन्द आदि समाज के अच्छे कार्यकर्ता हैं।
- श्री विनोदकुमार पीतलिया (मोखुन्दा–बेंगलुरु), श्री देवीलाल कोठारी (गोगुन्दा), श्रीमती कमलादेवी भंडारी (छोटीखाटू–सेलम) श्री सुमेरमलजी बैद (लाडनूं–सेलम), श्री प्रशान्त नौलखा (बराणा–सूरत),

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

श्री लादूलाल दूगड़ (आसीन्द), श्री शिवलाल राठौड़ (रावलिया–बोईसर), श्री लादूराम धारीवाल (छोटीखाटू), श्री जेनिश भोगर (सायरा–सूरत), श्री गेहरीलाल संचेती (बागड़), श्री मोहनलाल चौधरी (सरदारगढ़), श्री मांगीलाल नौलखा (बराणा–आसीन्द), श्री छोगालाल बाफना (कूंठवा), श्रीमती टीपूबाई भंडारी (आमेट), श्रीमती पानादेवी कुचेरिया (सुजानगढ़–दिल्ली), श्रीमती गुलाबदेवी दूगड़ (लूणकरणसर), श्री सुरेश पामेचा (झालों की मदार–मुम्बई), श्री बाबूलाल चपलोत (गोगुन्दा), श्री प्रेमचन्द रांका (सेलागुड़ा–सूत्र) का स्वर्गवास हो गया। पारिवारिक जनों ने पूज्यवर के दर्शन कर आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव : बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर साहित्य समिति द्वारा साधु–साध्वियों और समणश्रेणी के लिए समायोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के अंतर्गत बाल कहानी प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि पौष शुक्ला नवमी (२ जनवरी २०१२) है। प्रतियोगिता में संभागी बनने के इच्छुक व्यक्ति न्यूनतम २ॉ शब्दों वाली स्वलिखित कहानी अपने नाम और दीक्षा मर्याय के उल्लेख के साथ निर्धारित तिथि तक साहित्य समिति को प्रेषित कर दें। उल्लेखनीय है––कार्तिक मास में समायोजित गीत निर्माण प्रतियोगिता में २ॉ से अधिक गीत प्राप्त हुए। परिणाम यथासमय प्रकाशित किए जाएंगे।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/– श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री पूसालालजी आंचलिया के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्रा संपतराज, ताराचन्द, ज्ञानचन्द आंचलिया, पादूकलां–सिरकाली–चेन्नई द्वारा प्रदत्त।

३१००/– शासनसेवी स्व. श्री मानिकचन्दजी नाहटा (राजगढ़–कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्रा प्रेम, प्रवीण, प्रमोद, नरेन्द्र नाहटा द्वारा प्रदत्त।

२१००/– स्व. श्रीमती झूमरदेवी धारीवाल (धर्मपत्नी–श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री सरबतचन्दजी धारीवाल, छोटीखाटू–सूरत) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्रा किशोरचन्द, डालमचन्द, सुपौत्रा अंकुर, हितेश, धीरज, अंकित, अक्षय धारीवाल द्वारा प्रदत्त।

२१००/– स्व. श्रीमती रम्भादेवी महनोत (धर्मपत्नी–स्व. श्री मेघराजजी महनोत, उदासर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्रा आनंदमल, पन्नालाल, शिवरतन महनोत द्वारा प्रदत्त।

२१००/– स्व. श्री कन्हैयालालजी दुधोड़िया (छापर–मुम्बई) की ८वीं पुण्यतिथि पर लाभचन्द, खड़गसिंह, अभयकुमार दुधोड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/– श्री जंवरीमलजी दुधोड़िया (छापर–गुवाहाटी) के ६वें दशक में प्रवेश के अवसर पर उनके सुपुत्रा व पुत्रावधू अशोक–कनक, जयसिंह–प्रेम, सुपुत्रा सरोज बोथरा, स्नेहलता मालू एवं हेमलता सेठिया, सुपौत्रा श्रेयांश, वर्द्धमान, मुदित, सुपौत्रा रिषिका, प्रियंका दुधोड़िया द्वारा प्रदत्त।

आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय पूज्यप्रवर की सेवा में है। पत्रा व्यवहार के लिए हमारा पता है––

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा–जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा आमेट
पो. चारभुजारोड–३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान)
फोन : ०६६८००५५३८१, ०६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११–२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**